B.A. History
Part: I / Paper: I

BY: DR. ANAND KUMAR SINGH, ASSISTANT PROF., Dept. OF HISTORY, JAWAHAR LAL NEHRU COLLEGE, DEHRI-ON-SONE

TOPIC: उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

भारतीय इतिहास में उस काल को जिसमें सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई, को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है। इस युग की सभ्यता का केन्द्र पंजाब से बढ़कर दोआब में आ गया था। उत्तर वैदिक काल के अंतिम दौर में 600 ई० पू० के आस-पास आर्य लोग कोशल, विदेह एवं अंग राज्य से परिचित थे। इस संस्कृति का मुख्य केन्द्र मध्य देश था।

ऋग्वैदिक काल में कबीले पर शासन करने वाला राजा अब उस प्रदेश पर शासन करने लगा। उपनिषद काल में अनेक राजा ऐसे हुए जो ब्रह्म ज्ञान तथा आध्यात्म चिंतन से जुड़े थे। जिनमें प्रमुख थे - विदेह के जनक, कैकेय के अश्वपति, काशी के अजातशत्रु और पांचाल के प्रवाहण जाबालि।

राष्ट्र शब्द जो प्रदेश का सूचक है पहली बार इस काल में प्रकट हुआ। आरम्भ में पांचाल एक कबीले का नाम था परन्तु बाद में वह प्रदेश का नाम हो गया। उत्तर वैदिक काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था। शतपथ ब्राह्मण में इन्हें वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कहा गया है।

उत्तर वैदिक काल में राजतंत्र ही शासन का आधार था पर कहीं-कहीं पर गणराज्यों के उदाहरण भी मिलते हैं। अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता बताया गया है। सभा एवं समिति इस समय भी राजा की निरंकुशता पर रोक लगाती थी। राज्य के उच्च पदाधिकारियों को 'रत्नी' कहा जाता था। ये राज परिषद के सदस्य थे। रत्नियों की सूची में राजा के सम्बन्धी, मंत्री, विभागाध्यक्ष एवं दरबारीगण आते हैं। विभागाध्यक्षों में सेनानी (सेनापति), सूत (रथ सेना का नायक), ग्रामणी (गांव का मुखिया), संग्रहीता (कोषाध्यक्ष) तथा भागदुघ (अर्थमंत्री) अर्थात् करों को वसूलने वाला आदि के नाम मिलते हैं। क्षत्रपति तथा शतपति नामक दो प्रान्तीय पदाधिकारियों के नाम मिलते हैं। क्षत्रपति सीमान्त प्रदेश का प्रधान अथवा न्यायाधिकारी तथा शतपति 100 ग्रामों के समूह का अधिकारी था।

सभा श्रेष्ठ जनों की संस्था थी तथा समिति राज्य की केन्द्रीय संस्था थी जिसे जन सामान्य की संस्था भी कहते थे। समिति की अध्यक्षता राजा स्वयं करता था। समिति की अध्यक्षता करने वाले को ईशान भी कहा जाता था। सभा को अथर्ववेद में नारिष्ठा कहा गया है। इस काल में विदथ का उल्लेख नहीं मिलता है।

उत्तर वैदिक काल में राजा कोई भी स्थायी सेना नहीं रखता था। अथर्ववेद के अनुसार राजा को आय का 16 वां भाग मिलता था। ऋग्वैदिक काल में बलि एक स्वेच्छाकारी कर था जबकि उत्तरवैदिक काल में यह एक नियमित कर हो गया।

— 0 —